Dr. Sunil Kumar "Suman"
Assistant Prof.
Dept. of Psychology
D B. College, Jaynagar
L N.M.U. Darbhanga

System Psy.

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date:-21-10-20
20-Next class

Dr. Sunil Kumar
Assistant Prof.
Dept. of Psych
D B. College, Jayn
L N.M.U. Darbhan

Neo-Freudians

contribution of Erik Erikson

3. खेल अवस्था: पहल शक्ति बनाम दोषिता (play age: initiative versus guilt) – यह अवस्था लगभग चार साल की आयु से छह साल की आयु तक की होती है और यह फ्रायड के मनोलैंगिक विकास (psychosexual development) के शिश्नावस्था या लिंग प्रधानवस्था (phallic stage) से मिलती-जुलती है। यह वह अवस्था होती है जिसमें बच्चों में समाजिक दुनिया उसे सक्रियता एवं पहल शक्ति दिखलाने के लिए एक तरह की चुनौती प्रदान करता है। उन्हें दूसरे कार्य करने में आनंद आता है, नयी-नयी जबावदेहियों को निभाने में आनंद आता है। जब पहल शक्ति बनाम दोषिता से उत्पन्न संघर्ष को बच्चा सफलापूर्वक समधान कर लेता है तो इससे उसमें जिस मनोसामाजिक शक्ति की उत्पत्ति होती है, उसे उद्देश्य (purpose) कहा जाता है। उद्देश्य से तात्पर्य एक ऐसी मनोसमाजिक शक्ति से होती है जो बच्चों में कई लक्ष्य निश्चित करने की क्षमता एवं विश्व के साथ बिना किसी दंड के भय के ही प्राप्त करने की क्षमता विकसित रहता है।

4. स्कूल अवस्था: परिश्रम बनाम हिनता (school age: industry versus inferiority) – मनोसामाजिक अवस्था की यह पांचवी अवस्था (fifth stage) है जिसे काफी महत्वपूर्ण अवस्था माना गया है। यह अवस्था 12 साल से लेकर 19 या 20 साल की आयु तक सामान्यतः होती है। इस अवस्था में किशोरों के बीच अहं पहचान (ego identity) का भाव एक धनात्मक मनोसमाजिक पहलू (positive psychosocial) या भूमिका संभ्रान्ति (role confusion) या जिसे पहचान संभ्रान्ति

Scanned with CamScanner

(identity confusion) भी कहा जाता है, एक ऋणात्मक मनोसामाजिक पहलू (negative psychosocial aspect) के रूप में विकसित होता है। इस अवस्था में किशोर अपने बारे में अपनाये हुये ज्ञान को इस तरह संगठित करने का कोशिश करता है जिससे उनकी अपनी पहचान बने रहे। इसके लिए अन्य बातों के अलावा यह आवश्यक है कि किशोरो जब बच्चा परिश्रम बनाम हिनता के परिश्रम के संघर्ष का समाधान सही-सही ढंग से कर लेता है तो उसमें एक विशेष मनोसामाजिक शक्ति (Psychosocial Strength) विकसित होती है जिसे सामर्थ्य (Competency) कहा जाता है। सामर्थ्यता से तात्पर्य किसी कार्य को पूरा करने से शरीरिक एवं बौद्धिक क्षमताओं के उचित प्रयोग से होता है।

5. किशोरावस्था: अहं पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति (Adolescence: Ego identity versus role confusion) — मनोसामाजिक विकास यह पाँचवीं अवस्था (Fifth Stage) है जिसे काफी महत्वपूर्ण अवस्था माना गया है। यह अवस्था 12 साल से लेकर 19 या 20 साल की आयु तक समान्यतः होती है। इस अवस्था में किशोरो के बीच अहं पहचान (ego identity) का भाव एक धनात्मक मनोसामाजिक पहलू (Positive Psychosocial aspect) तथा मनोसामाजिक पहलू (negative psychosocial aspect) के रूप में विकसित होती है। कर्तव्यनिष्ठता से तात्पर्य किशोरो में समाज के विचारधाराओं, शिष्टाचार एवं मानकों के अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता से होता है। कर्तव्यनिष्ठता को इरिकसन ने इस अवस्था में व्यक्तित्व का एक सार तत्व माना है।

Next class

Scanned with CamScanner